जो देवताओं को भी दुर्लभ है

संसार की दुर्लभ और अद्वितीय दीक्षायें

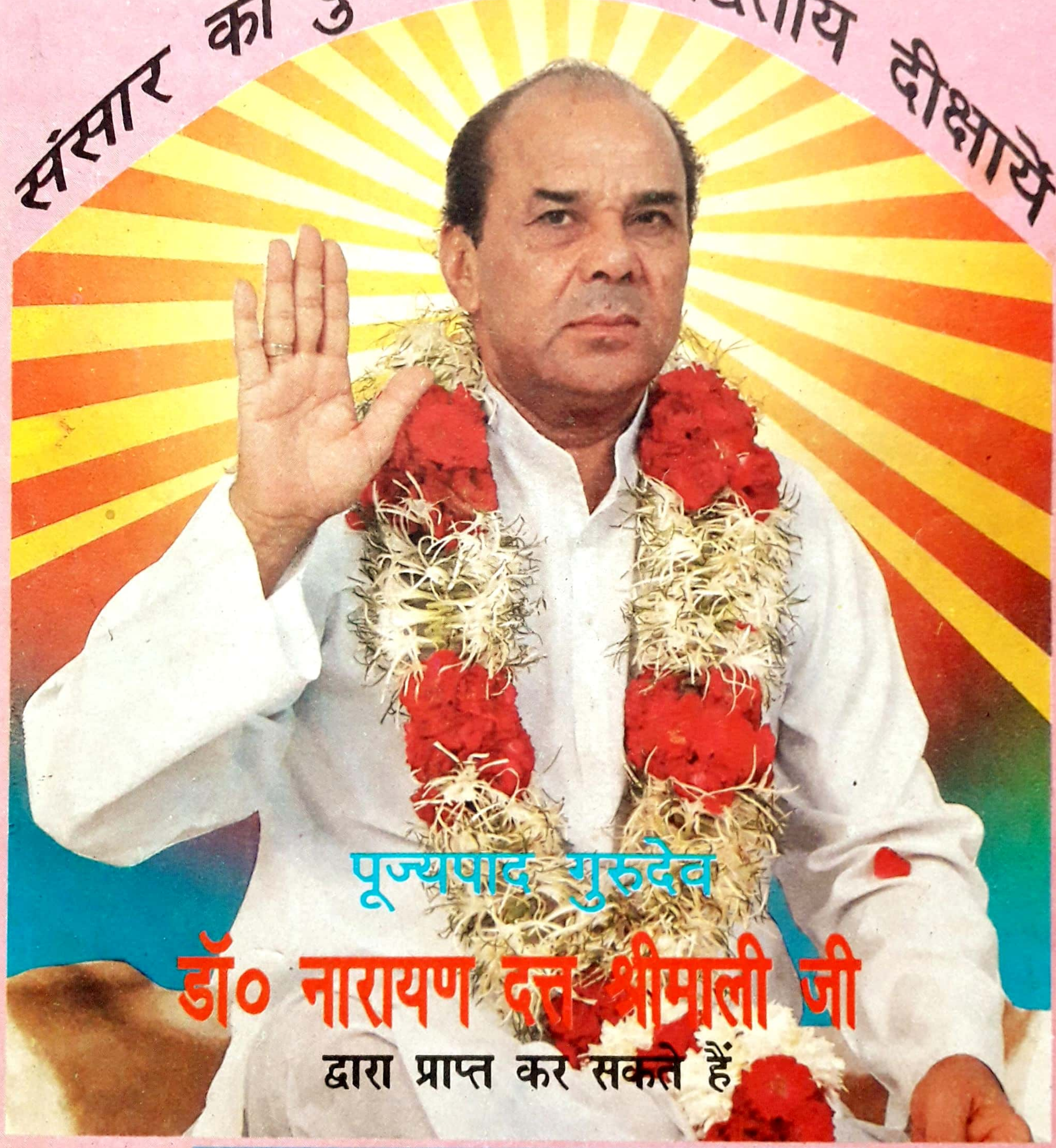

पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

द्वारा प्राप्त कर सकते हैं

समग्र साफल्यदायक, ऐश्वर्य प्रदायक,
अनुकूल एवं अत्यधिक जीवनोपयोगी १०८ दीक्षायें, जिनमें
से आप अपनी आवश्यकतानुसार दीक्षाएं चयन कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

दीक्षा क्या है?

''दीक्षा'' सद्गुरु दर्शन, स्पर्श और शब्द के द्वारा शिष्य के भीतर शिवभाव उत्पन्न करने की क्रिया है। 'दीक्षा' ज्ञान देने की क्रिया है, जिसके द्वारा जीव का उद्धार होता है, और वह अपने मूल स्वरूप ब्रह्म तक जाकर अखण्डानन्द में लीन हो जाता है। 'दीक्षा' का रहस्य इतना गूढ़ और जटिल है, कि उसे मात्र कुछ शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह तो साक्षात् ईश्वर द्वारा गुरु रूप में उपस्थित होकर मनुष्य को पूर्णता प्रदान करने की क्रिया है। 'दीक्षा' को ही सम्पूर्ण साधना कहा गया है, सद्गुरु यदि शक्तिपात द्वारा अपनी शक्ति का कुछ अंश दीक्षा के माध्यम से अपने शिष्य को देते हैं, तो फिर किसी भी प्रकार की, उससे सम्बन्धित साधना की उसे आवश्यकता ही नहीं पड़ती, क्योंकि 'दीक्षा' साधना-सिद्धि का द्वार खोलने की क्रिया है, जिससे साधक अपने जीवन को निश्चित अर्थ दे सकता है।

'दीक्षा' का तात्पर्य यही है, कि सद्गुरु के पास तपस्या का जो विशेष अंश है, जो आध्यात्मिक पूंजी है, उसे वे अपने नेत्रों के माध्यम से शक्तिपात क्रिया द्वारा, शिष्य को दैहिक, भौतिक, आध्यात्मिक आवश्यकतानुसार उसके हृदय में उतार सके। यदि शिष्य का शरीर रूपी कपड़ा मैला हो गया है, तो सद्गुरुदेव उसे बार-बार दीक्षा के माध्यम से धोकर स्वच्छ कर सकें।

Scanned with CamScanner

दीक्षाओं की आवश्यकता क्यों और किसलिए?

युग परिवर्तन की इस संधिवेला में दिनप्रतिदिन ऐसी अनहोनी घटनायें घट रही हैं, कि हर मानव-मन अपने जीवन की सुरक्षा को लेकर भयभीत व चिन्तित है, वह किसी ऐसी सत्ता के आश्रय की खोज में है, जो उसे, उसके परिवार को, सुरक्षा कवच पहिनाकर, उसकी सारी परेशानियों को अपने ऊपर लेकर उसे भयमुक्त कर सके, और यह सुरक्षा उसे सद्‌गुरु के द्वारा प्रदान की गई दीक्षाओं से ही प्राप्त हो सकती है। दीक्षाओं को लेने की आवश्यकता हमारे जीवन में इसलिए **भी है** क्योंकि

१. दीक्षा प्राप्ति के उपरान्त शिष्य को उससे सम्बन्धित किसी भी प्रकार की साधना करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

२. सद्‌गुरु अपनी ऊर्जा के प्रवाह द्वारा शिष्य के शरीर में वह शक्ति प्रवाहित कर देते हैं, जिससे उसे मनोवाञ्छित सफलता प्राप्त होती ही है।

३. यह शास्त्रीय विधान है, कि जब तक साधक या शिष्य किसी साधना से सम्बन्धित दीक्षा विशेष को प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

४. जीवन के दुःख, दैन्य, भय, परेशानी, बाधा एवम् अड़चनों को दूर कर शारीरिक, मानसिक, आर्थिक लाभ हेतु भी दीक्षाओं की आवश्यकता होती है।

५. नैतिक उत्थान के साथ-साथ जीवन में वासन्ती हवा जैसी मधुरता और सूर्य जैसा प्रकाश दीक्षाओं के माध्यम से ही सम्भव है।

६. जीवन में अनवरत उन्नति, सफलता, विजय, सुख-शांति, ऐश्वर्य, यश व कीर्ति पाने के लिए।

७. भविष्य ज्ञान, भविष्य कथन की विद्या ज्ञात करने, वर्तमान को संवारने हेतु।

८. शारीरिक सौन्दर्य, सम्मोहन, निरोगी काया, प्रेम में सफलता व अनुकूल विवाह हेतु।

९. सभी प्रकार की **अपनी** गुप्त इच्छाओं की पूर्ति हेतु।

१०. सभी प्रकार के **कष्टों**, समस्याओं का निवारण, मनोवाञ्छित कार्य एवम् इच्छाओं की पूर्ति हेतु जीवन को सही दिशा प्रदान करने के लिए दीक्षाओं की आवश्यकता प्रत्येक मानव को पड़ती ही है।

Scanned with CamScanner

दीक्षाओं के प्रकार—

दीक्षाओं को शास्त्रों में १०८ प्रकार से वर्णित किया गया है। इन १०८ दीक्षाओं में भौतिक, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान और सभी प्रकार के सुखों की उपलब्धि छिपी हुई है। स्त्री हो या पुरुष, बालक हो या वृद्ध, चाहे किसी भी समुदाय, जाति, सम्प्रदाय का व्यक्ति क्यों न हो, इन दीक्षाओं को **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** से किसी भी शिविर में या दिल्ली स्थित उनके गुरुधाम में पहुंच कर प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति चाहे तो इनमें से एक, दो या कुछ चुनी हुई दीक्षायें या समस्त दीक्षायें अपनी इच्छानुसार ले सकते हैं। इन दीक्षाओं को १०८ भागों में इस प्रकार बांटा गया है—

—कब कौन सी दीक्षा ली जाए—

१. सामान्य दीक्षा	शिष्यत्व धारण करने हेतु यह प्रारम्भिक गुरु दीक्षा है।
२. ज्ञान दीक्षा	अद्वितीय ज्ञान की प्राप्ति और मेधा में वृद्धि हेतु।
३. जीवन मार्ग	जीवन के सारे अवरोधों, अशक्तता को समाप्त करके जीवन को चैतन्यता प्रदान करने वाली दीक्षा।
४. शाम्भवी दीक्षा	शिवत्व प्राप्त कर शिवमय होने के लिए।
५. चक्र जागरण दीक्षा	समस्त षट्चक्रों को जाग्रत कर अद्वितीय बनाने वाली दीक्षा।
६. विद्या दीक्षा	जड़मति को सुजान कालीदास बना देने वाली दीक्षा।
७. शिष्याभिषेक दीक्षा	पूर्ण शिष्यत्व प्राप्त करने के लिए।
८. आचार्याभिषेक दीक्षा	ज्ञान की पूर्णता के लिए।
९. कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	इस दीक्षा के सात चरण हैं। इसे एक-एक करके भी लिया जा सकता है या एक साथ सातों चरणों की दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी का जागरण कर अद्वितीय व्यक्तित्व का धनी बना जा सकता है।
१०. गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा	गर्भस्थ बालक को अभिमन्यु की भांति मनोनुकूल बनाने हेतु दीक्षा।
११. शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण	गुरु की तपस्या के अंश, दीक्षा द्वारा प्राप्त कर प्रथम व जीवन का अंतिम सत्य प्राप्त करने हेतु।
१२. फोटो द्वारा कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	यह दीक्षा व्यक्ति के उपस्थित न होने पर फोटो से भी प्राप्त की जा सकती है।
१३. धन्वन्तरी दीक्षा	निरोगी काया प्राप्त करने हेतु।
१४. साबर दीक्षा	तान्त्रिक साधना में सफलता व सिद्धि के लिए।
१५. सम्मोहन दीक्षा	अपने अन्दर अद्भुत सम्मोहन पैदा करने हेतु।
१६. सम्पूर्ण सम्मोहन दीक्षा	सभी को सम्मोहित करने की कला प्राप्ति हेतु।
१७. महालक्ष्मी दीक्षा	सुख - सौभाग्य, आर्थिक लाभ की प्राप्ति हेतु।
१८. कनकधारा दीक्षा	लक्ष्मी के निरन्तर आवागमन के लिए।
१९. अष्टलक्ष्मी दीक्षा	धन प्रदायक विशेष दीक्षा।
२०. कुबेर महादीक्षा	कुबेर की भांति स्थायी सम्पन्नता पाने हेतु।
२१. इन्द्र वैभव दीक्षा	इन्द्र जैसा वैभव, यश प्राप्त करने हेतु।
२२. शत्रु संहारक दीक्षा	शत्रु से बदला लेने हेतु।
२३. प्राण वल्लभा अप्सरा दीक्षा	प्राणवल्लभा अप्सरा की सिद्धि हेतु।
२४. सामान्य ऋण मुक्ति	ऋण से मुक्त होने हेतु।
२५. शतोपंथी दीक्षा	शिव की अद्वितीय शक्ति प्राप्ति हेतु।
२६. चैतन्य दीक्षा	स्फूर्तिदायक, पूर्ण चैतन्यता प्रदान करने वाली दीक्षा।
२७. उर्वशी दीक्षा	वृद्धता मुक्ति एवम् यौवन प्राप्ति हेतु।
२८. सौन्दर्योत्तमा अप्सरा दीक्षा	पुरुष व स्त्री दोनों का ही पूर्ण कायाकल्प करने हेतु।
२९. मेनका दीक्षा	विश्वामित्र की तरह पूर्ण साधनात्मक व भौतिक सफलता प्राप्ति हेतु।
३०. स्वर्ण प्रभा यक्षिणी दीक्षा	आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए।
३१. पूर्ण वैभव दीक्षा	समस्त प्रकार के आनन्द, वैभव की प्राप्ति हेतु।
३२. गन्धर्व दीक्षा	गायन संगीत में दक्षता के लिए।
३३. साधना दीक्षा	पूर्वजन्म की साधना को इस जन्म से जोड़ने हेतु।
३४. तन्त्र दीक्षा	तान्त्रिक साधनाओ में सफलता हेतु।

"दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, वह कार्य सम्पन्न हो ही जाए, अपितु दीक्षा का तात्पर्य तो यह है कि, आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, उस कार्य के लिए आपका मार्ग प्रशस्त हो"

Scanned with CamScanner

३५. बगलामुखी दीक्षा	:	शत्रु को परास्त कर अपने अन्दर अद्वितीय साहस भरने वाली दीक्षा।
३६. रसेश्वरी दीक्षा	:	रसायन-शास्त्र में दक्षता के लिए तथा पारद-संस्कार विद्या प्राप्त करने हेतु।
३७. अघोर दीक्षा	:	शिवोक्त साधनाओं की पूर्ण सफलता के लिए।
३८. शीघ्र विवाह दीक्षा	:	विवाह सम्बन्धी रुकावटों को मिटाकर शीघ्र विवाह हेतु।
३९. सम्मोहन दीक्षा	:	यह तीन चरणों वाली महत्वपूर्ण दीक्षा है।
४०. वीर दीक्षा	:	वीर साधना सम्पन्न कर, वीर द्वारा इच्छानुसार कार्य सम्पन्न कराने के लिए।
४१. सौन्दर्य दीक्षा	:	अद्वितीय सौन्दर्य प्रदान करने वाली दीक्षा।
४२. जगदम्बा सिद्धि दीक्षा	:	देवी को सिद्ध करने वाली दीक्षा।
४३. ब्रह्म दीक्षा	:	सभी दैवीय शक्तियों को प्राप्त करने वाली दीक्षा।
४४. स्वास्थ्य दीक्षा	:	सदैव स्वस्थ्य व निरोगी बनने हेतु।
४५. कर्ण पिशाचिनी दीक्षा	:	सभी के भूत-वर्तमान को ज्ञात करने के लिए।
४६. सर्प दीक्षा	:	सर्प दंश से मुक्ति व सर्प से आजीवन सुरक्षा हेतु।
४७. नवार्ण दीक्षा	:	त्रिशक्ति की सिद्धि के लिए।
४८. गर्भस्थ शिशु की कु० जागरण दीक्षा	:	इससे गर्भस्थ बालक के संस्कार महापुरुषों जैसे होते हैं।
४९. चाक्षुष्मती दीक्षा	:	नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए।
५०. काल ज्ञान दीक्षा	:	सही समय पहिचान कर उसका सदुपयोग करने हेतु।
५१. तारा योगिनी दीक्षा	:	तारा योगिनी की सिद्धि हेतु, जिससे जीवन भर अनवरत रूप से धन प्राप्त होता रहे।
५२. रोग निवारण दीक्षा	:	समस्त रोगों को मिटाने हेतु।
५३. पूर्णत्व दीक्षा	:	जीवन में पूर्णता प्रदान करने वाली दीक्षा।
५४. वायु दीक्षा	:	अपने-आप को हल्का, हवा जैसा बनाने हेतु।
५५. कृत्या दीक्षा	:	मारक सिद्धि प्रयोग की दीक्षा।
५६. भूत दीक्षा	:	भूतों को सिद्ध करने की दीक्षा।
५७. आज्ञा चक्र जागरण दीक्षा	:	दिव्य-दृष्टि प्राप्ति के लिए।
५८. सामान्य बेताल दीक्षा	:	बेताल शक्ति को प्रसन्न करने के लिए।
५९. विशिष्ट वेताल दीक्षा	:	वेताल को सम्पूर्ण सिद्ध करने के लिए।
६०. पञ्चांगुली दीक्षा	:	हस्त रेखा-शास्त्र में निपुणता प्राप्त करने के लिए।
६१. अनंग रति दीक्षा	:	पूर्ण सौन्दर्य एवम् यौवन शक्ति प्राप्त करने के लिए।
६२. कृष्णत्व गुरु दीक्षा	:	जगत गुरुत्व प्राप्त करने के लिए।
६३. हेरम्ब दीक्षा	:	गणपति की सिद्धि हेतु।
६४. हादी, कादी, मदालसा दीक्षा	:	नींद व भूख-प्यास पर नियन्त्रण के लिए।
६५. आयुर्वेद दीक्षा	:	आयुर्वेद के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिए।
६६. वराह मिहिर दीक्षा	:	ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिए।
६७. तांत्रोक्त गुरु दीक्षा	:	गुरु से हठात् (बल पूर्वक) शक्ति प्राप्ति हेतु।
६८. गर्भ चयन दीक्षा	:	अपने मनोनुकूल गर्भ की प्राप्ति हेतु।
६९. निखिलेश्वरानन्द दीक्षा	:	संन्यास की विशेष भावभूमि प्राप्ति हेतु।
७०. दीर्घायु दीक्षा	:	लम्बी आयु की प्राप्ति हेतु दीक्षा।
७१. आकाश गमन दीक्षा	:	इससे मन, आत्मा आकाश का भ्रमण करती है।
७२. निर्बीज दीक्षा	:	जन्म-मरण, कर्म-बन्धन की समाप्ति के लिए।
७३. क्रिया-योग दीक्षा	:	जीव-ब्रह्म ऐक्य ज्ञान प्राप्ति हेतु।
७४. सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा	:	सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने हेतु।
७५. षोडश अप्सरा दीक्षा	:	जीवन में समस्त सुख-सौभाग्य, सम्पत्ति प्राप्ति के लिए।
७६. षोडशी दीक्षा	:	सोलह कला पूर्ण, त्रिपुर सुन्दरी साधना हेतु।
७७. ब्रह्माण्ड दीक्षा	:	ब्रह्माण्ड के अनन्त रहस्यों को जानने के लिए।
७८. पाशुपातेय दीक्षा	:	शिवमय बनने के लिए।
७९. कपिला योगिनी दीक्षा	:	राज्य बाधा एवम् नौकरी में आने वाली अड़चनों को दूर करने हेतु।
८०. गणपति दीक्षा	:	भगवान गणपति की विशिष्ट कृपा प्राप्ति हेतु।
८१. वाग्देवी दीक्षा	:	वाक् चातुर्य एवम् वाक् सिद्धि के लिए।

इसके अतिरिक्त कुछ विशिष्ट उच्च कोटि की दीक्षाएं भी हैं, जो पूज्य गुरुदेव से परामर्श कर प्राप्त की जा सकती है।

Scanned with CamScanner

दीक्षाओं के लिए निश्चित न्यौछावर देने की आवश्यकता क्यों-

१. क्योंकि यह हमारी भारतीय परम्परा रही है, कि हम गुरु का ज्ञान बिना गुरु दक्षिणा के प्राप्त नहीं कर सकते।

२. बिना गुरु आज्ञा के विद्या सीखने पर एकलव्य को भी अंगूठा दान देना ही पड़ा था।

३. व्यक्ति के पास इतना समय, साधना व आध्यात्मिक शक्ति नहीं है, कि वह कठोर साधना कर सके, इसलिए दीक्षा की कुछ दक्षिणा - राशि गुरु-चरणों में अर्पित कर, वह उस साधना के रूप में तपस्या के अंश को प्राप्त करता है। अपने समय, श्रम द्वारा गुरु-सेवा न कर सकने के बदले वह अपना अंशदान देता है।

४. आपकी दीक्षा के बदले दी गई राशि अनगिनत साधु- संन्यासियों, तपस्वियों, योगियों का भरण - पोषण करती है।

५. दीक्षा की यह राशि भारतीय परम्परा की लुप्त हुई गोपनीय मंत्र, तंत्र, यंत्र विद्याओं के अद्वितीय शोध केन्द्र, साधना स्थली दिल्ली में करोड़ों की लागत से बनने वाले **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली फाण्डेशन इंटरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट सोसायटी"** द्वारा निर्मित अध्यात्म के एक विशालतम केन्द्र "सिद्धाश्रम" के निर्माण में लगाई जाती है।

६. इस धन के माध्यम से स्थान-स्थान पर निःशुल्क चिकित्सा, प्याऊ, निर्धनों के लिए कम्बल एवं वस्त्र वितरण आदि समाजोपयोगी कार्य सम्पन्न होते हैं।

७. गरीबों एवं निर्धन विद्यार्थियों की शिक्षण सुविधा के लिए भी आपका दिया हुआ यह अंशदान उन्हें सहायता के रूप में प्राप्त होता है।

सिद्धाश्रम

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली फ़ाउन्डेशन इंटरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट सोसायटी द्वारा निर्मित एक भव्य, जीवन्त, जाग्रत, शिक्षा, संस्कृति व अध्यात्म का विशालतम केन्द्र **"सिद्धाश्रम"**।

- अनुमानित लागत कई करोड़।
- उपरोक्त केन्द्र में प्राचीन भारतीय विद्याओं , दर्शन, मनोविज्ञान, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, ध्यान, सम्मोहन-विज्ञान एवं अन्य रहस्यमयी गुप्त विद्याओं पर शोध अनुसन्धान।
- देश-विदेश के शोध छात्रों के लिए विशेष सुविधा।
- न केवल भारतवर्ष अपितु विदेशों में उपरोक्त विद्याओं का विस्तार, साधना शिविरों की देशव्यापी श्रृंखला।
- प्राकृतिक चिकित्सा व आयुर्वेद अनुसन्धान व उत्थान केन्द्र।
- मानवतावादी आध्यात्मिक चेतना का विस्तार।

इसके लिए आवश्यकता है आपके सहयोग एवं पूर्ण भागीदारी की। पूर्ण जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम , ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण
गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

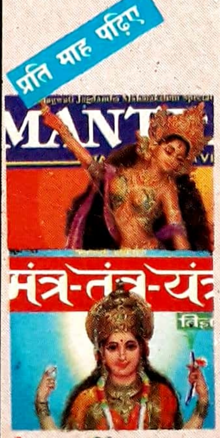

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

संरक्षक : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एक हिन्दी मासिक पत्रिका, जो आप को देगी प्रति माह एक नवीन ज्ञान •रोचकता •नई साधनाएं •योग •ज्योतिष •आयुर्वेद •कुण्डलिनी जागरण •राजनीतिक भविष्य •शेयर मार्केट •सभी कुछ को तो प्रति माह समेटती हुई।

नोट - वार्षिक सदस्यता शुल्क १६८/- (डाक व्यय सहित)

: सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन: ०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन: ०११-७१८२२४८ फेक्स: ०११-७१८६७००

Scanned with CamScanner